आर. एन. आई - राजहिन/2003/9899 डाक पंजीयन संख्या - श्रीगंगानगर/105/2012-2014

मासिक पत्रिका

अजायब बानी

वर्ष : ग्यारहवां अंक : नौवां जनवरी-2014

नये साल की शुभकामनाएं 5

नाम को न विसारें 7

सवाल-जवाब - 19

गुफा दर्शनों से पहले संदेश 29

मेडिटेशन टाक 33

धन्य अजायब 34

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, मुद्रक व संपादक : प्रेम प्रकाश छाबड़ा ने प्रिन्ट टुडे श्री गंगानगर से छपवाकर सन्तबानी आश्रम 16 पी.एस. रायसिंहनगर - 335 039 जिला - श्री गंगानगर (राजस्थान) से प्रकाशित किया।

e-mail : dhanajaibs@gmail.com Website : www.ajaibbani.org

प्रकाशन दिनांक 1 जनवरी 2014 -142- **मूल्य - पाँच रुपये**

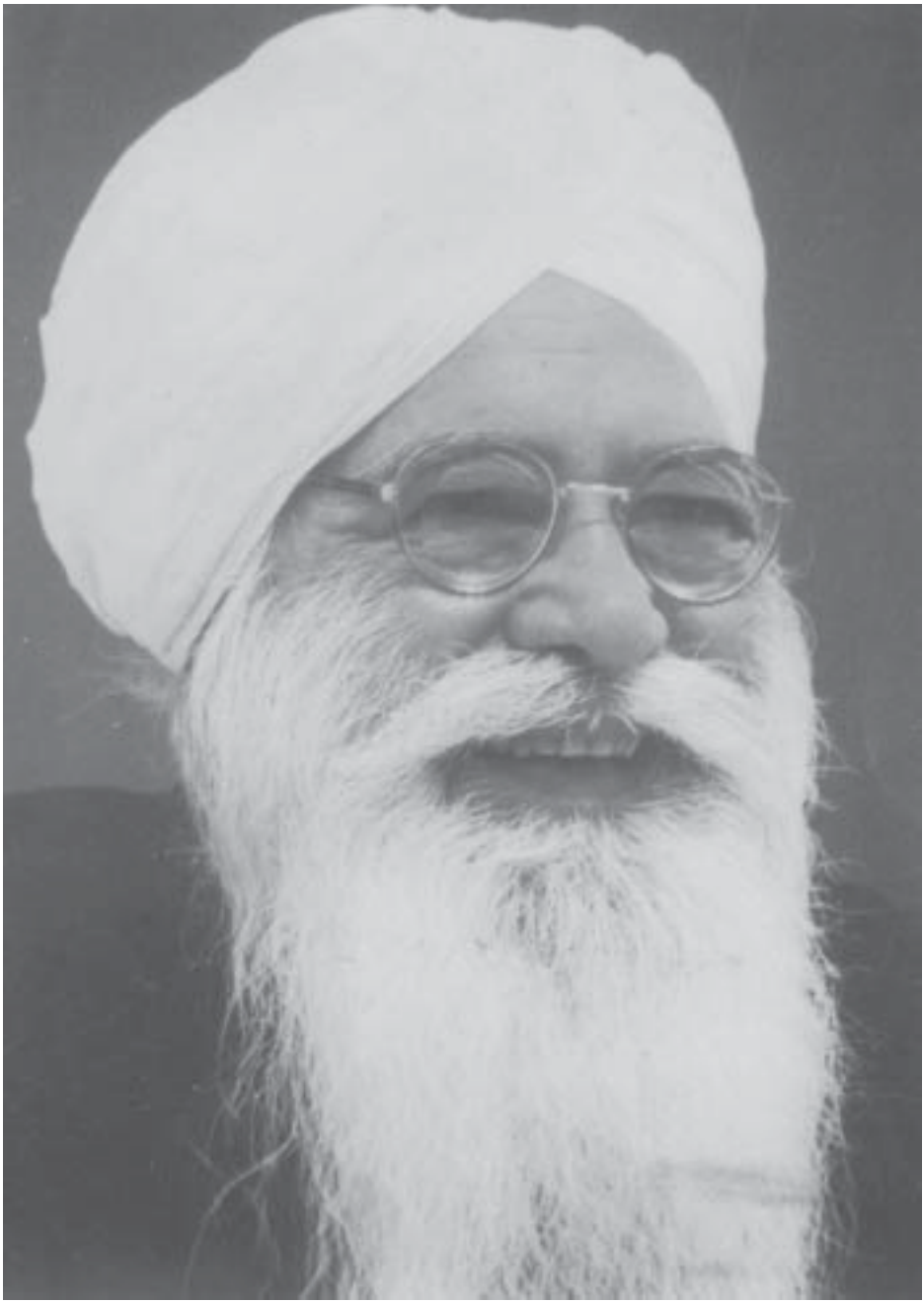

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा

नए साल की शुभकामनाएं

आप सबको नए साल की बहुत-बहुत शुभकामनाएं। हमने इस साल में यह लेखा-जोखा लगाना है कि हमने कितना भजन-सिमरन किया है? संसार में हर महात्मा ने अपने सेवकों को कोई न कोई तरीका बताया है। गुरु नानकदेव जी, गुरु रामदास जी, गुरु गोविंद सिंह जी ने भी अपने सेवकों को जीवन की पड़ताल के बारे में बताया।

गुरु साहिबानों के समय में कई बार सेवक संगत में खड़े होकर बताया करते थे कि मैंने कितनी तरक्की की है और कितने ऐब किए हैं। गुरु गोविंद सिंह जी ने अपने सेवकों से कहा, ''जब आपसे पाप हो जाए तो आप एक कंकड़ एक तरफ रख दें फिर गिनें कि आपने कितने पाप किए; जब गिनेंगे तो शर्म महसूस होगी।''

करतूत पशु की मानस जात लोक पचारा करे दिन-रात।

हम बाहर से इंसान कहलवाते हैं और देखने में भी इंसान लगते हैं अगर हमारी करतूतें ऐसी हैं तो हमें अपने आप पर शर्म जरूर आएगी। परमात्मा कृपाल ने हमें डायरी रखने के लिए दी जिसे आप रोजनामचा, डायरी या जीवन की पड़ताल कह सकते हैं।

हमने देखा है कि महाराज जी ने 'नामदान' के वक्त कई बूढ़ियों को डायरियां दीं लेकिन उन्होंने डायरियों को घर ले जाकर ऊँची जगह पर रख दिया और डायरी के आगे घी की ज्योत जलानी शुरू कर दी। जब फिर महाराज जी आए तो आपने उनसे पूछा, ''क्यों भाई! डायरी रखते हो, जीवन की पड़ताल करते हो?'' एक बूढ़ी माता और एक बुजुर्ग ने कहा कि हमने डायरी को ऊँची जगह पर रखा हुआ है, कभी झूठा हाथ नहीं लगाते; डायरी के आगे घी की ज्योत जलाते हैं और रोजाना धूप देते हैं।

सन्त हमें डायरी घी की ज्योत जलाने के लिए और धूप देने के लिए नहीं देते। वे हमें डायरी इसलिए देते हैं कि हम अपनी पड़ताल कर सकें कि हमने आज दिन में कितना भजन-अभ्यास किया; किसी की कितनी निन्दा की? जुबान के साथ किसी का बुरा किया या अपने अंदर ही सोचकर बुरा किया? पैसों के साथ किसी का बुरा किया या भला किया? जब हम रात को सोते हैं तो यह सब कुछ डायरी में लिखते हैं तो मन को कुछ धिक्कार पड़ती है और शर्म भी आती है कि मैं इतना कुछ करता हूँ।

पश्चिम के लोग इस डायरी की बहुत कद्र करते हैं। मैं जब बाहर टूर पर जाता हूँ तो देखता हूँ कि वे लोग रात को सोते समय डायरी भरते हैं कि हमने आज दिन में क्या कुछ किया है? वे उस डायरी में यह भी दर्ज करते हैं कि मैंने कहाँ तक तरक्की की, अंदर क्या देख रहा हूँ; क्या 'शब्द' सुन रहा हूँ?

सतसंगियों को अपनी पड़ताल करनी चाहिए। दुनियावी तरक्कियां हमारे साथ नहीं जाएंगी, इनसे अहंकार पैदा होता है कि हम इतने धनवान हो गए हैं, हमारे इतने बेटे-बेटियां हैं। यह दुनिया का मसाला यहीं रह जाएगा। तरक्की करने वाली चीज सिर्फ भजन-सिमरन है। 'नाम' की कमाई हमें यहाँ शान्ति और मालिक के दरबार में जगह देती है। गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

तोसा बंधो नाम का ऐथे ओथे नाल।

मैं एक बार फिर आपको नए साल की शुभकामनाएं देता हूँ।

आपका प्यारा,

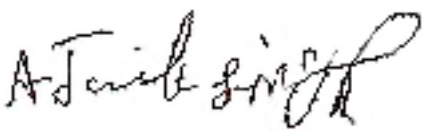

सतसंग - परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

नाम को न विसारें

गुरु नानकदेव जी की बानी

मुंबई

मैं अपने परमपिता परमात्मा सावन-कृपाल का धन्यवाद करता हूँ जिन्होंने हमें अपना यश करने का मौका दिया। जिसने मिश्री खाई है वही मिश्री का स्वाद जानता है। जिसे गुरु के चरणों का और 'नाम' का रस मिल गया हो वही उस रस को समझता है; वही नाम के फायदे बताता है। आपके आगे गुरु नानकदेव जी का शब्द रखा जा रहा है।

गुरु नानकदेव जी अपने शिष्यों को बहुत प्यार से नाम के फायदे बताते हैं कि दुनिया के रंग कच्चे हैं इन्हें उतरते हुए समय नहीं लगता। नाम का रंग इतना पक्का है कि यह रंग एक बार जिस आत्मा पर चढ़ जाए तो उतरता नहीं। नाम के बगैर जीव की जो दुर्दशा होती है उसे सन्त ही जानते हैं।

प्रभु की भक्ति के बिना जीव की ऐसी दुर्दशा होती है जिस तरह परों के बिना पक्षी की दुर्दशा होती है, पानी के बिना मछली तड़प कर मर जाती है। आंखों के बिना इंसान की बुरी हालत होती है। नाक के बिना इंसान शोभा नहीं पाता। जो गाय दूध न दे उसे बूचड़ो के हवाले कर देते हैं। सूंड के बिना हाथी शोभा नहीं पाता। अगर वेश्या कोई बच्चा पैदा भी कर ले तो वह किस पिता का नाम दर्ज करवाएगी। जिस तरह फूल के बिना बाग की दुर्दशा होती है इसी तरह मालिक की दरगाह में भी जीव की नाम के बिना दुर्दशा होती है वह दरगाह में शोभा नहीं पाता।

गुरु नानकदेव जी महाराज अपने प्यारे शिष्यों से कहते हैं, ''देखो प्यारेयो! **नाम को न विसारें**, दुनिया की हुकूमत, धन-दौलत

और यहाँ तक कि जिस शरीर को आप रोज पालते-पोसते हैं यह भी आपके साथ नहीं जाएगा।'' कबीर साहब कहते हैंः

ऐसा संगी कोई नहीं जैसी सग्गी देह।
मरती वरया रे नरा साड़ के कीती खेह।।

आत्मा सदा शरीर के साथ रहती है लेकिन अंत समय में यह भी उड़ारी मार जाती है फिर इस देह को खाक में मिला देते हैं। प्यारेयो! नाम के बिना यह जीव जलता आया है और जलता ही चला जाता है। हम कह देते हैं कि हम बहुत शान्त हैं लेकिन हमारे अंदर कभी काम की आग भड़कती है, कभी क्रोध की आग भड़कती है तो भाई-भाई को माफ नहीं करता, पति-पत्नी को माफ नहीं करता। हम किसी की तरक्की देखकर जलते हैं उस आग को तो बयान ही नहीं किया जा सकता। फरीद साहब कहते हैंः

गुज्जी भाय जले संसारा।

इंसान सोते-जागते इस गुज्जी आग में जलता है। सन्त-सतगुरु कहते हैं कि इंसान माँ के पेट की जठर अग्नि में इतना जलता है कि तीन महीने में इसकी हड्डियां पकती हैं, यह माँस का लोथड़ा इधर-उधर हिल भी नहीं सकता। जठर अग्नि का ताप इतना होता है कि बाहर दुनिया में उतना ताप नहीं होता। लोगों ने हजारों साल बाद कब्रें खोदकर देखी हैं कब्र में भी हड्डियां नहीं गलती। इसी तरह अग्नि में जलाने पर भी हड्डियां नहीं जलती।

गुरु नानकदेव जी कहते हैं, ''मेरे गुरु ने बताया कि इस जलन से बचने का रास्ता परमात्मा की भक्ति, नाम की भक्ति है।''

मोती त मंदर ऊसरहि रतनी त होहि जड़ाउ।
कसतूरी कुंगू अगरि चंदनि लीपि आवै चाउ।।

आप प्यार से कहते हैं, ''प्यारेयो! अगर परमात्मा हम पर मेहर करके हमें मोतियों के मंदिर दे दे जिनमें मन को मोहने वाले चमकीले रतन जड़े हों हम जिधर भी देखें हमें हमारी ही शक्ल दिखाई दे। उन पर कस्तूरी का लेपन हो दिमाग को ऐसी महक आए कि हम सोऐं तो हमें सूरज उगने का भी पता न चले।''

आम गरीबों के घर तो मिट्टी और घास-फूस के बने होते हैं। कोई उन्हें सीमेंट से बना लेता है, कोई उन पर अच्छा रंग कर लेता है। ये मंदिर आपके साथ नहीं जाएंगे, आप परमात्मा को और **नाम को न विसारें**।

प्यारेयो! सन् 1947 से पहले यहाँ अंग्रेज हुकूमत का राज्य था। उस समय हिन्दुस्तान के राजा बहुत शक्तिशाली थे। उन राजाओ ने अपने रहने के लिए बहुत अच्छे महल बनवाए हुए थे। रानियों के जेवरों में बहुत कीमती मोती जड़े होते थे। यह हमने अपनी आँखों से देखा है लेकिन जब देश आजाद हुआ तो इस वक्त की हुकूमत ने उन महलों पर कब्जा कर लिया अब वहाँ पब्लिक के दफ्तर खुले हुए हैं और रानियों के करोड़ो रूपयों के गहने नीलाम हो चुके हैं।

मैंने दो-तीन राजाओं को शरीर छोड़ते हुए देखा है। जिन राजाओं ने मोती महल, हीरा महल बनवाए थे वे उन महलों को साथ नहीं ले जा सके यहीं छोड़ गए। अब उन महलों पर कबूतर ही बोलते हैं। जो राजा अभी भी जीवित हैं वे भी अपने बनवाए हुए महलों में नहीं जा सकते।

उस समय राजाओं का इतना सख्त कानून था कि शहर में कोई बाजा नहीं बजा सकता था, खुशी नहीं मना सकता था। सिर्फ राजा के महलों में मरासी लोग रात के बारह बजे तक बाजे बजाते डाँस करत थे, वे राजा अब यतीमों की तरह कब्रों में सो गए हैं।

आप अनुराग सागर पढ़ते हैं कि काल ने कबीर साहब को कितने लालच दिए और प्यार भी किया कि तू मुझे अपनी मोहर छाप दिखा दे, मैं तेरी मोहर-छाप देखकर जीवों को छोड़ दिया करूंगा। जब कबीर साहब काल के बस में नहीं आए तो काल ने कबीर साहब को बहुत कष्ट दिए। आखिर काल ने कबीर साहब से कहा, ''मैं तेरे नाम पर कई पंथ जारी कर दूंगा। मैं घर-घर में मीट और शराब का बोलबाला कर दूँगा। मर्द तो क्या औरतें भी मीट-शराब खाने-पीने लग जाएगीं।''

जब गुरु नानकदेव जी इस संसार में कबीर साहब की तरह धुर दरगाह से मालिक का परवाना लेकर आए तब आपको भी काल इसी तरह मिला। काल ने गुरु नानकदेव जी को सारे लालच देकर कहा, ''तू जंगलों में घूमता फिरता है दिन-रात लोगों को उपदेश देता है। मैं तुझे रहने के लिए मोती और रत्नों से जड़े हुए महल बनवा देता हूँ जिनके ऊपर कस्तूरी का लेपन किया होगा; तू मौजें लूटना तुझे लोगों को उपदेश देकर क्या करना है?''

गुरु नानकदेव जी ने काल से कहा, ''अगर मैं ऐसे महल ले भी लूंगा तो नाम के बिना वे महल मेरे किस काम के हैं? आखिर एक दिन मैंने इस देह को भी छोड़ जाना है।''

आप हमें खबरदार करते हुए कहते हैं कि अगर हमें जिंदगी में इस तरह के सुगंधी वाले मकान मिल भी जाते हैं तो परमात्मा के **नाम को न विसारें** और परमात्मा की भक्ति न छोड़ें। आप यह मत भूलें कि हमें यहाँ से किसी ने नहीं उठाना। मुसाफिर की तरह तभी पता लगेगा जब हमने बिस्तर झाड़कर चले जाना है।

मतु देखि भूला वीसरै तेरा चिति न आवै नाउ।।
हरि बिनु जीउ जलि बलि जाउ।।

आप प्यार से कहते हैं, ''नाम के बिना जीव जलता आया है जलता ही चला जाएगा। चिता की अग्नि आखिर एक दिन ही जलाती है। उस समय हमारे अंदर आत्मा नहीं होती यह शरीर दुःख-सुख महसूस नहीं करता। एक दिन इसके अंदर कीड़े पड़ने हैं कीड़ो ने माँस खाना है लेकिन ईर्ष्या के कीड़े हमें दिन-रात काट रहे हैं। ईर्ष्या की आग हमें रोज ही जला रही है। हम दिन-रात काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार की आग में जल रहे हैं।''

यह बात मैं पहले भी कई बार बता चुका हूँ। बहुत साल पहले की बात है कि अमेरिका से किसी लड़की का पत्र आया। उस लड़की ने पत्र में लिखा कि मेरे स्कूल में कोई लड़की है जो मुझसे ज्यादा सुंदर है उसे देखकर मेरा दिल बहुत जलता है। असल बात यह है कि हमें अपना चेहरा दिखाई नहीं देता, हम अपनी उतनी परख नहीं करते। हमें हमेशा दूसरे का ही सब कुछ अच्छा लगता है। मैंने उन दोनों लड़कियों को देखा है। मैंने पत्र का जवाब दिया कि बेटी तू मुझे पहले मिल लेती तो शायद तुझे शान्ति आ जाती। मेरी निगाह में तू उस जैसी ही सुंदर है।

हम तो किसी को सुंदर देखकर भी सहन नहीं कर सकते अगर कोई हमसे लम्बा या छोटा हो हम दुखी होते हैं। जब हम इतने दुखी हैं तो सोचें सुख कहाँ है?

प्यारेयो! जब मैं प्रेमियों से मिलता हूँ तो मेरे पास सेवादार आनन्द खड़ा होता है। यहाँ सतसंग में बब्बी भी बैठा है। उस बेचारे के शरीर में कर्मों के मुताबिक बल पड़े हुए हैं और वह साफ बोल भी नहीं सकता। जब आनन्द ने उसे मेरे पास आते देखा तो उसे रोक दिया कि इसने क्या बात करनी है। मैंने आनन्द से कहा, ''इसे मेरे पास आने दे और तू बाहर चला जा।''

मुझे पता था कि बब्बी ने अपने अभ्यास की बात करनी है लेकिन आनन्द को आदत है कि मैं बाहर सुनूं तो सही। बहुत लोगों में ऐसी आदत होती है कि यह ऐसी क्या बात करता है यह बंदा तो देखने वाला भी नहीं। बब्बी ने जब अपने अभ्यास की बात कही कि मैं अंदर क्या देखता हूँ तो मैंने इसकी बाजू पकड़कर इसे अपने नज़दीक कर लिया कि तू धीरे बोल। उसकी बात सुनकर मेरा दिल खुश हुआ। बब्बी ने मेरे पास अपना सारा दिल खोलकर रख दिया कि मैं यहाँ तक जाता हूँ इतना कुछ देखता हूँ। मैं बहुत खुश हुआ कि इसका अभ्यास अच्छा बन गया। बब्बी तो चला गया। आनन्द ने मेरे पास आकर कहा कि मैं तो इसे ऐसे ही समझता था।

मैंने आनन्द से कहा कि किसी का शरीर न देखो उसका प्यार देखो कि उसका गुरु के प्रति कितना प्यार है अगर शरीर में बल हैं तो क्या हमने उसे धक्के मारने हैं? कबीर साहब कहते हैं:

नाम जपत कोड़ी भला चौं चौं पए जिस चाम।
कंचन देह किस काम है जे मुख नाहीं नाम।।

हम इतिहास पढ़ते हैं अष्टावक्र ऋषि ने राजा जनक को इतनी जल्दी ज्ञान करवाया था जितना समय घोड़े की रकाब में पैर रखने में लगता है। उस ऋषि को अष्टावक्र इसलिए कहते हैं क्योंकि उसके शरीर में आठ बल थे।

प्यारेयो! हमें शरीर की तरफ तवज्जो नहीं देनी चाहिए मसला तो हमारी चढ़ाई का और हमारे प्यार का है। नाम के बिना जीव जलता आता है और जलता ही चला जाता है; भागा हुआ आता है और दौड़ता हुआ चला जाता है। इसे न आगे का पता है न पीछे का पता है कि मैं कहाँ से आया हूँ आगे कहाँ जाना है?

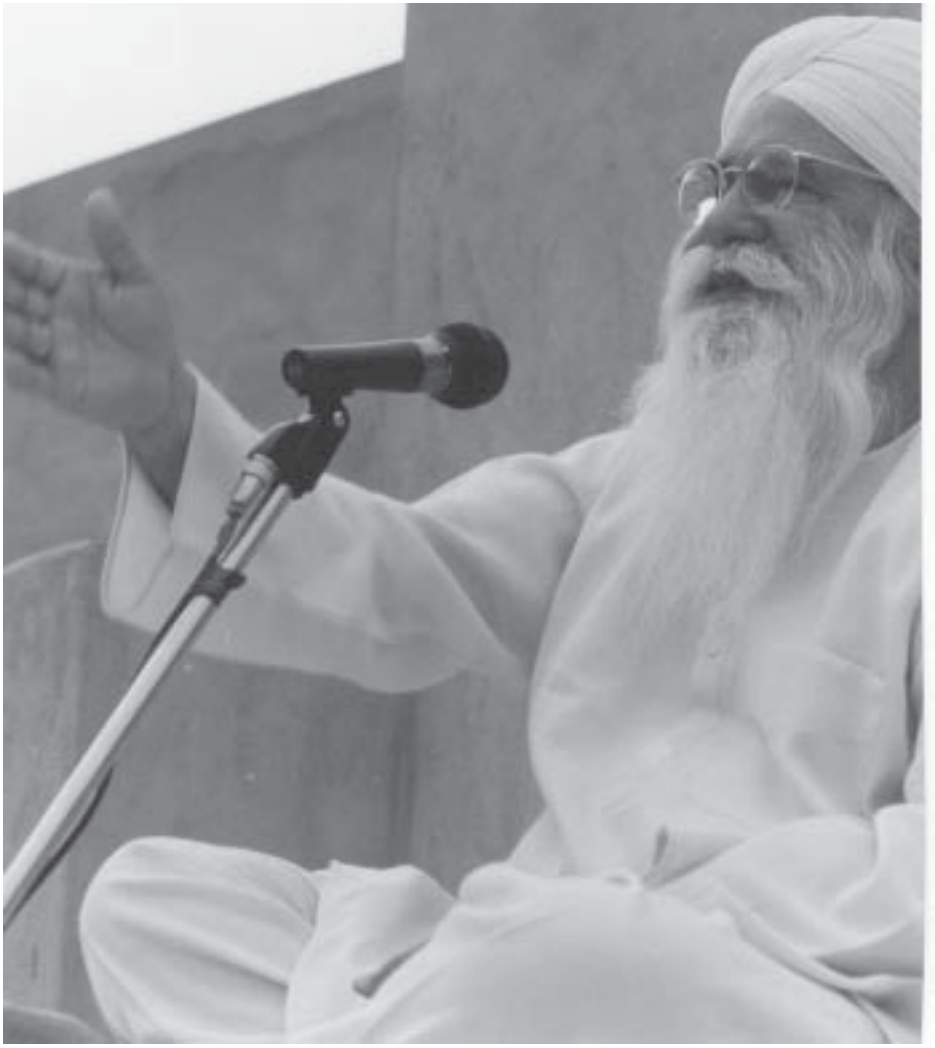

मैं आपणा गुरु पूछि देखिआ अवरु नाही थाउ।।

गुरु नानकदेव जी कहते हैं कि मेरे गुरु ने मुझे बहुत प्यार से और पक्के वायदे से बताया है कि **नाम को न विसारें**। नाम के बिना जीव का कोई ठिकाना नहीं है। यह जीव नाम के बिना पार हो ही नहीं सकता। नाम ही वह बेड़ा है जिसमें बैठकर यह भवसागर से

पार होगा। परमात्मा ने नाम के बेड़े की सृजना करके इस बेड़े को अपने प्यारे बच्चे सन्तों के हवाले किया है। कबीर साहब कहते हैं:

दीनदयाल भरोसे तेरे सब परिवार चढ़ाया बेड़े।
जे तिस भावे ते हुक्म मनावे, इस बेड़े को पार लगावे।

तू जीवों पर दया करता है। मैंने तेरे भरोसे सारे परिवार को बेड़े में चढ़ा लिया है। अब तेरे आगे विनती है कि तू सबको पार कर दे, तेरे आसरे ही सब कुछ चलता है। तेरी मौज है तू इनसे कमाई करवा। गुरु गोबिंद सिंह जी भी कहते हैं कि गुरु दिन-रात अपने शिष्यों के लिए फरियाद करता है, ''हे परमात्मा! अगर इन्हें थोड़ा सा भी दुख होगा तो मुझे भी दुख लगेगा। मैं इन्हें तड़फते हुए नहीं देख सकता। सन्तों का परिवार संगत ही होती है।''

दास दुखी ते मैं दुखी।

प्यारे बच्चों! सन्त दिन-रात हमें समझा रहे हैं कि आप अभ्यास करें और बुरे कर्म बनाने से बचें। उनका मतलब यही है कि हम दुखों की नगरी से छलांग लगाकर चले जाएं, समय की कद्र करें।

महाराज कृपाल कहा करते थे, ''दरिया की लहर और समय किसी का इंतजार नहीं करता।''

धरती हीरे लाल जड़ती पलंग लाल जड़ाओ।
मोहणी मुख मणी सोहे करे रंग पसाओ।

हम मकानों में संगमरमर का कीमती पत्थर लगा लेते हैं। चाहे आप हीरों का फर्श भी क्यों न लगा लें! चाहे पलंग के पाँव रत्नों से क्यों न जड़ लें और उस महल में सुंदर से सुंदर चंद्रमुखी स्त्रियां हाव-भाव क्यों न करती हों! ये सब चीजें हमारे किसी काम की नहीं बल्कि इनसे मन में अशान्ति पैदा होती है। अगर ये सब

चीजें मिल भी जाएं फिर भी **नाम को न विसारें**। ये चीजें आपके काम नहीं आएंगी, आप इन चीज़ों को यही छोड़ जाएंगे ये आपके साथ नहीं जाएंगी। नाम के बिना कोई आपका संगी-साथी नहीं।

मत दिख भूला विसरे तेरा चित्त न आवे नाओ।
सिद होवा सिद लाई रिद आखा आओ।
गुप्त प्रगट होए बेसा लोग राखे पाओ।

गुरु नानकदेव जी महाराज अपने प्यारे शिष्यों को उपदेश देते हैं कि नाम वाले को पहली मंजिल पर रिद्धियां-सिद्धियां घेर लेती है। आप रिद्धियों-सिद्धियों को पाकर **नाम को न विसारें**। नाम को भुलाने के लिए ही रिद्धियां-सिद्धियां अभ्यासी के रास्ते में आती है।

रिद्धियों-सिद्धियों वाले कहते हैं कि परमात्मा ने तो आपको बच्चे नहीं दिए लेकिन हम आपको बच्चे दे सकते हैं। डाक्टर तो आपको ठीक नहीं कर सकता लेकिन हम आपको ठीक कर सकते हैं या वे बैठे-बैठे गुप्त हो जाते हैं और जहाँ चाहें वहाँ प्रकट हो जाते हैं। जिस तरह जुगनू रात को पर खोलता है तो रोशनी हो जाती है, जब पर बंद करता है तो रोशनी खत्म हो जाती है।

इसी तरह रिद्धि-सिद्धि वाले कभी प्रकट हो जाते हैं कभी गुप्त हो जाते हैं। लोग बड़ाई करते हैं कि यह महात्मा बहुत पहुँचा हुआ है यह कभी शेर बन जाता है, कभी साँप बन जाता है। इस तरह ये लोग अपनी कमाई बर्बाद करके मालिक के दरबार में खाली हाथ ही पहुँचते हैं फिर इन्हें यमों के हाथों ख्वार होना पड़ता है। महाराज सावन सिंह जी अपने प्यारे शिष्यों से कहा करते थे, ''आप रिद्धियों-सिद्धियों की तरफ मत झाँके। रिद्धियों-सिद्धियों से काम लेना ऐसा है जैसे हम वेश्या की कमाई खा रहे हैं।''

योग का अर्थ है आत्मा को परमात्मा के साथ जोड़ना। आत्मा और परमात्मा हमारे शरीर के अंदर है लेकिन योगी लोग शब्द-नाम का रास्ता छोड़कर प्राणायाम के साधनों मे लग गए रिद्धियों-सिद्धियों में फँस गए। योगियों ने प्राणायाम करके अपने शरीर का बुरा हाल कर लिया। रिद्धियां-सिद्धियां योगियों को घेर लेती है जिससे वे अपना रास्ता भूल जाते हैं और परमात्मा के दरबार में खाली हाथ ही पहुँचते हैं। जिस तरह जुआरी सब कुछ हारकर खाली हाथ ही घर जाता है।

सुलतान होवा मेल लश्कर तख्त राखा पाओ।
हुक्म हासिल करी बैठा नानका सब वाओ।
मत दिख भूला विसरे तेरा चित्त न आवे नाओ।

अब आप कहते हैं कि चाहे आप बड़े से बड़े मुल्क के सुल्तान बन जाएं सारी दुनिया ही आपकी फौज बन जाए और उन फौजों पर आपका हुक्म चलता हो! चाहे जिस मुल्क को दबा सकते हो लेकिन जब इस संसार से जाना है तब ये तख्त ताज और फौजें आपके साथ नहीं जाएंगी। चाहे लाखों लोग आपको सलाम करते हों! लाखों ही बाजे बजते हों! आखिर में जुआरी की तरह खाली हाथ ही संसार से जाना है।

जिस तरह आज राष्ट्रपति और प्रधानमंत्री हैं उस समय सुल्तान बादशाह हुआ करते थे। जब आखिरी समय आता है तो बड़ी ही करूणा रस पैदा करने वाली धुन बजाते हैं। उस समय कबीर साहब का यह शब्द भी बोलते हैंः

मन लागो मेरो यार फकीरी में चारो दिशा जंगीरी में।

अब मेरा मन यार की फकीरी में लग गया है। हाथ में सोटा है बगल में कुछ भी नहीं। कपड़ा भी जल जाता है राख उड़कर

लोगों की आँखो का सुरमा बन जाती है इसी तरह हमारी राख भी किसी की आँख का सुरमा बनकर रहेगी।

आप प्यार से कहते हैं कि हमारे साथ हमारा शरीर भी नहीं जाता। आप देखें! किसी राजा या राष्ट्रपति के साथ उसकी फौज या उसका हुक्म गया है? वह जिन महलों में रहता था वहाँ और लोग आकर डेरा लगा लेते हैं, उन फौजों के मालिक बन जाते हैं वह बेचारा तो खाली हाथ ही जाता है।

बाद में हम श्रद्धांजली बोलते हैं सब लोग उसकी बड़ाई करते हैं। परमात्मा को किसी की गवाही शहादत की जरूरत नहीं। जीव के जाने से पहले ही उसका सारा लेखा-जोखा तैयार होता है। जाते ही समझा देते हैं कि यह तेरा अमल नामा है। धर्मराज कहता है कि यह तेरी सजा है अब तुझे इस योनि में जाना है। जब यह अपना लेखा जोखा देखता है तो पछताता है रोता है फिर इसके रोने को कौन सुनता है? गुरु नानकदेव जी महाराज कहते हैं, ''तुझे वहाँ 'शब्द-नाम' की कमाई करनी थी। वहाँ मालिक की याद में रोता रातों को जागता तभी तेरे लिए फायदेमंद था।''

गुरु नानकदेव जी ने इस शब्द में अपने शिष्यों को बड़े प्यार से समझाया कि देखो भाई! **नाम को न विसारें**। सोते-जागते, उठते-बैठते नाम की कमाई करें। सन्त-सतगुरु हमें प्यार से बताते हैं कि नाम के बिना हम परमात्मा के दरबार में दाखिल हो ही नहीं सकते छूटना तो क्या था?

नाम बिना नहीं छूटस नानक सांची तरत उतारी।

***

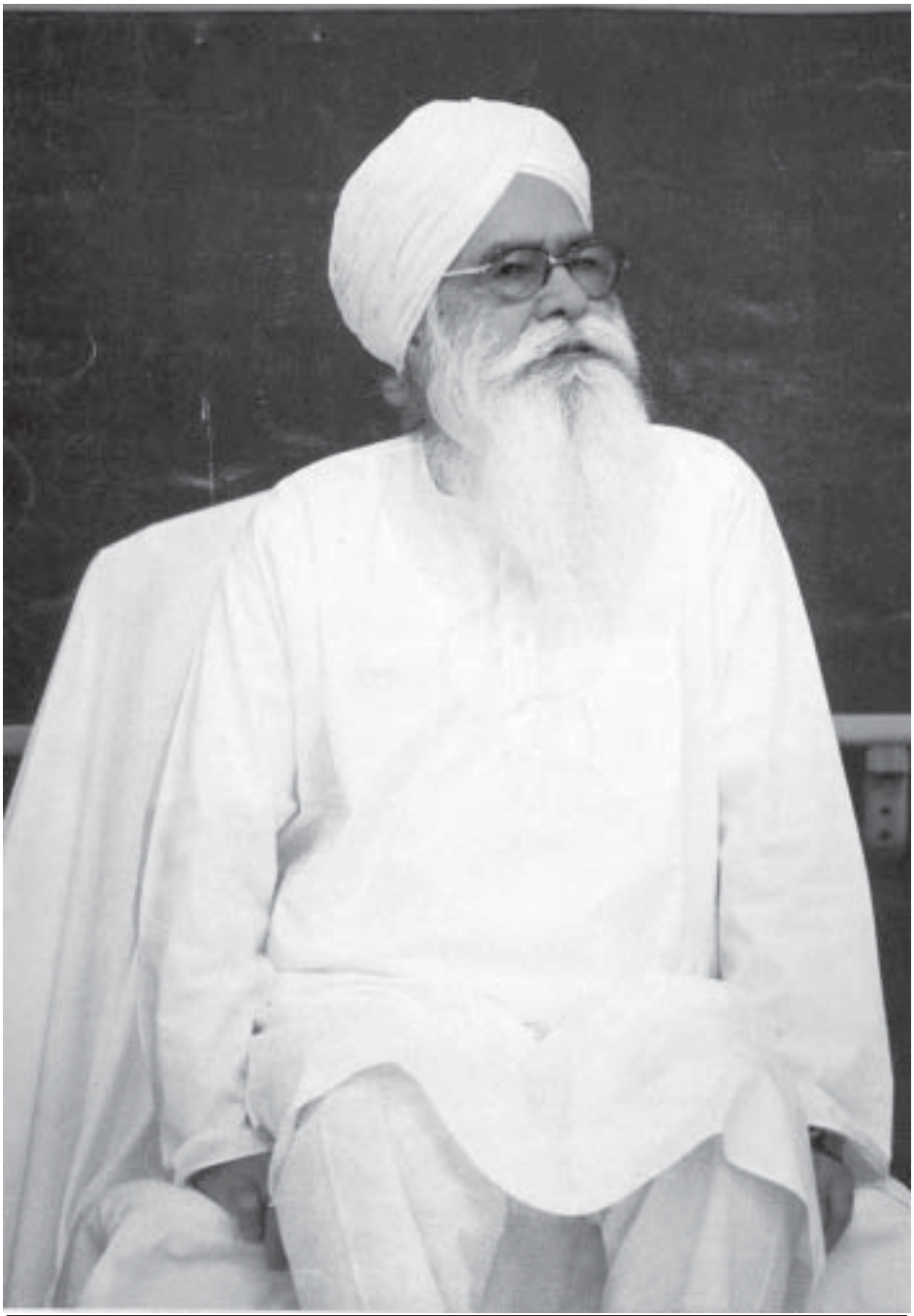

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा प्रेमियों के सवालों के जवाब

सवाल-जवाब

एक प्रेमी: *महाराज कृपाल ने अक्सर यह कहा है कि कुछ बेसतसंगी बच्चों का गुरु के साथ सतसंगियो से भी ज्यादा प्यार हो जाता है। उदाहरण के तौर पर मैं एक बार एक छोटे बच्चे की नर्स की हैसियत से देखभाल कर रहा था और वह चोला छोड़ गया। उस बच्चे की माता ने आपको पत्र लिखा तो आपने उसे बड़े प्यार से जवाब दिया कि महाराज कृपाल ने उस बच्चे की आत्मा की संभाल की है। मेरा सवाल यह है कि बेसतसंगियों का गुरु के साथ ऐसा क्या रिश्ता होता है जो गुरु उन्हें प्यार करते हैं?*

बाबाजी: मैंने इस बारे में सतसंग में कई बार बताया है लेकिन मैं आप लोगों को और भी खोलकर समझाने की कोशिश करूंगा आशा करता हूँ आप लोग प्यार से समझेंगे। यह संसार अशान्ति और दुखों से भरा हुआ है।

जीव खानि-खानि में से भटकता हुआ इंसानी जामे में आता है। उसे परमात्मा की बख्शीश की जरूरत होती है अगर परमात्मा बख्शीश करे तो जीव जो चाहे कर सकता है। जो जीव सतसंगी घरों में जन्म लेते हैं चाहे उन्हें नाम नहीं मिला होता लेकिन सतगुरु उनकी भी संभाल करता है। कई बार वे भी अचरज बात कर जाते हैं कि गुरु आ गया है, हम जा रहे हैं।

मैं मुक्तसर का एक वाक्या बताया करता हूँ कि एक आठ-नौ साल की लड़की थी जिसे नाम नहीं मिला था उसने सिर्फ बाबा सावन सिंह जी के दर्शन किए थे। उस लड़की ने परिवार को बताया

कि महाराज जी आ गए हैं आप छिड़काव कर दें, उनकी कार आ रही है वह मुझे दिखाई दे रहे हैं।

करण-कारण प्रभु शब्द-रूप होकर कण-कण में व्यापक है। परमात्मा जब बख्शीश करता है तो सतसंगियों के साथ मिलाप होता है। जब सतसंगी सिमरन करता है उसकी भावनाएँ गुरु के प्रति बड़ी प्रबल होती हैं। जब सतसंगी किसी के साथ उठता-बैठता है, कोई प्रोग्राम करता है, किसी आदमी के साथ दुनियादारी में संपर्क करता है जैसे कारोबार में हिस्सेदारी करना भी दुनिया का व्यवहार है। अगर सतसंगी को यह पता लग जाए कि अंदर मेरी चढ़ाई कहाँ तक है या मुझमें कितनी ताकत है तो सतसंगी उस ताकत को संभाल नहीं सकता, उस ताकत को ऐसे ही गँवा देता है।

आमतौर पर पहले केवल सिमरन ही दिया जाता था। जब सिमरन पक जाता था फिर परमात्मा की आवाज, धुन पकड़ाई जाती थी। कई बार ऐसा होता था कि सिमरन पका नहीं होता था, धुन मिलने से पहले गुरु चोला छोड़ जाता था या सतसंगी चोला छोड़ जाता था। सिमरन में ख्याल को इकट्ठा करके आँखों के पीछे लाना होता है, मुक्ति धुनात्मक नाम में ही होती है।

गुरु अर्जुनदेव जी के समय में सतसंगियों को साथ ही साथ चढ़ाई करवाई जाती थी। गुरु अर्जुनदेव जी के शिष्य बड़े चमत्कार दिखाने लग गए थे। काबुल का एक बड़ा मशहूर वाक्या है कि वहाँ एक प्रेमी के घर में कुछ सतसंगी गुरु चर्चा के लिए गए। उस घर का एक बच्चा चोला छोड़ गया, परिवार के लोगों ने बड़ा रूदन किया। उस रूदन को देखकर सिक्खों को बहुत तरस आया। उन्होंने गुरु का नाम लेकर सिमरन करके उस बच्चे को हाथ लगाया और बच्चा जिन्दा हो गया।

गुरु को ऐसे चमत्कार पसंद नहीं होते। यह कुदरत के कानून के खिलाफ है। मरना-जीना प्रभु ने अपने हाथ में रखा हुआ है। प्रभु जानता है कि मैंने किसे कब लेकर जाना है। जब हम उस ताकत के शरीक बनते हैं और बड़ा बनने की कोशिश करते हैं तो हमारे अंदर घटिया किस्म का अहंकार पैदा हो जाता है कि यह मैंने किया है। प्रभु को अहंकार अच्छा नहीं लगता। इसके बाद सतसंगी पर पर्दा डाल दिया गया इसलिए अब हमें पता नहीं लगता कि हम कितनी तरक्की कर चुके हैं ताकि हम अपनी कमाई खराब न करें।

बेशक शिष्य एक मिनट ही गुरु की याद में बैठे गुरु उसकी पूंजी को इकट्ठा करता है, उसकी पूंजी उसी को दे देता है। अगर हम ईमानदारी और सच्चे दिल से भजन करते हैं तो गुरु इसमें और भी रियायत बख्शता है। जो सच्चे दिल से गुरु के अभिलाषी बन जाते हैं गुरु उन्हें अपनी सारी दौलत बख्श देता है।

गुरु हरगोबिन्द के दो बच्चे थे। एक का नाम अटल और दूसरे का नाम गुरुदित्ता था। अटल ने मुर्दे को जिन्दा किया। गुरु साहब उस पर बहुत नाराज हुए कि तुमने कुदरत के खिलाफ ऐसा क्यों किया? हम प्रभु के दास है उसके शरीक नहीं और अटल से कहा कि तू शरीर छोड़ या मैं शरीर छोड़ता हूँ। बाबा अटल उसी जगह चादर ओढ़कर लेट गए और शरीर छोड़ दिया। उनकी याद में नौं मंजिला महल बना हुआ है।

इसी तरह उनके दूसरे बेटे गुरुदित्ता ने भी एक मरी हुई गाय को जिन्दा किया था। गुरु हरगोबिन्द उस पर भी बहुत नाराज हुए। उन्होंने कहा कि तुमने यह अच्छा नहीं किया। बाबा गुरुदित्ता ने भी अपना शरीर त्याग दिया।

जब परिवार के लोगों को गुरु गद्दी नहीं मिली और सेवकों को मिलती रही तो उन लोगों ने दिल्ली में औरंगजेब के पास शिकायत की और हर तरीके से कोशिश की कि संगत इन्हें मानती है अगर हम किसी तरह इन्हें मरवा दें तो हमारा काम बन जाएगा।

औरंगजेब का बुलावा आया कि गुरु हरिराय कचहरी में आकर लोगों की शिकायतों का जवाब दें तो आप खुद नहीं गए। आपने रामराय को जवाब देने के लिए भेज दिया। रामराय नें गुरु हरिराय से पूछा, ''अगर बादशाह मुझे करामात दिखाने को कहे तो?'' गुरु हरिराय ने कहा, ''करामात नहीं दिखानी, तेरे अंदर हर बात का जवाब गुरु ही देगा तुझे डरने की कोई जरूरत नहीं।''

जब रामराय दिल्ली गया तो काजियों ने उसकी काफी तारीफ की वह बड़ाई में आ गया। एक काजी ने कहा कि तुम कहते हो कि तुम्हारा हिन्दु-मुसलमान सबसे प्यार है। हम तुम्हें दावत देते हैं तुम उसमें शामिल होना। हम एक बकरा तुम्हारे घर भेज देंगे।

काजियों ने बकरे की एक टाँग काट ली, तीन टाँगों वाला बकरा उसके घर भेज दिया। रामराय मुसीबत में फँस गया कि

यह बहुत मुश्किल है। उसमें अन्तर्यामता थी कि शायद ये मुझसे मरा हुआ बकरा न माँग लें! दूसरे दिन कचहरी में जवाब-तलबी हुई तो काजियों ने कहा, ''रामराय हमने सुना है कि तुझमे बहुत अन्तर्यामता है तो यह बताओ कि हमने कल जो तीन टाँगों वाला बकरा तुम्हारे पास भेजा था क्या तुम उसे जिन्दा कर सकते हो?''

उस समय रामराय ने करामात दिखाई। कचहरी में तीन टाँग पर जिन्दा बकरा खड़ा कर दिया, चौथी टाँग काजी के घर में थी। उस समय न्याय काजियों के हाथ में था। जब रामराय से चौथी टाँग के बारे में पूछा तो रामराय ने कहा चौथी टाँग काजियों ने खाई है अगर इनमें करामात है तो यह चौथी टाँग लगा दें लेकिन बेचारे काजियों के पास करामात नहीं थी।

जब गुरु हरिराय को इस बात का पता लगा तो आप रामराय से बहुत नाराज़ हुए और उससे कहा, ''तुमने जो कर्म किया है यह गुरुमत के उलट है तुम हमारे सामने मत आना।'' रामराय ने अपनी सारी जिन्दगी देहरादून में ही बिताई। आप आसा जी की वार* में कई सतसंग पढ़ चुके हैं जिसमें एक तुक यह भी आती हैः

मिट्टी मुसलमान की पेड़े पई कुम्हार।
घड़ भांडे ईटां किया जल्दी करे पुकार।
जल जल रोवे बपरी झाड़-झाड़ पैन अंगियार।

औरंगजेब ने पूछा कि तुम्हारे गुरुग्रन्थ में मुसलमानों की निन्दा क्यों की गई है कि मुसलमान की मिट्टी कुम्हार के पेड़े में पड़ जाती है और जल्दी पुकार करती है। लेकिन रामराय ने बादशाह को खुश करने के लिए गुरुओं की लिखी तुक को ही पलट दिया। रामराय ने कहा कि मुसलमान की मिट्टी नहीं वहाँ बेईमान की मिट्टी लिखी हुई है। गुरु साहब ने इस बात का भी बहुत बुरा

* परमात्मा के रंग - 2005

मनाया और कहा कि तुझे किस बात का डर था? तेरे ऊपर तेरा पूरा गुरु था अगर तू गुरु की तरफ थोड़ा-सा भी अंदर झाँकता तो तुझे मदद मिलती। यह कारण भी उसके साथ जुड़ा था कि अब तू हमारे सामने मत आना।

आखिर रामराय नें अपनी गद्दी देहरादून में चलाई। उसके चेलो ने उसे जिन्दा ही जला दिया था। गुरु गोबिन्द सिंह बड़े विशाल दिल वाले थे। आपने सदा ही रामराय के साथ मिलकर चलने की कोशिश की कि मिलकर चलने में ही फायदा था।

हमारे सतगुरु कृपाल प्यार के समुद्र थे। आप हमेशा ही विरोधियों से यही कहते रहे, ''हम सबने परमात्मा की भक्ति करनी है, आओ! हम सब मिलकर परमात्मा की भक्ति करें।''

भाई गुरुदास जी की वारों पर सतसंग हो चुके हैं। समय आने पर रसल पर्किन्स उसकी किताब बनाकर संगत की सेवा करेंगे। आप उस किताब की भूमिका में पढ़ेंगे कि गुरु नानकदेव जी की गद्दी को प्राप्त करने वाले असफल रहे। उन्होंने कैसे-कैसे ओछे यत्न किए और गुरुओं को कितने-कितने कष्ट दिए।

अब मैं आपको इस सवाल के जवाब के बारे में बताता हूँ कि जिन लोगों को नाम नहीं मिला होता गुरु उनकी संभाल कैसे करता है? महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''गुरु सतसंगी लोगों के घरों में पालतू जीवों की भी संभाल करता है। यह कुदरत का कानून है कि सतसंगियों का जिनसे भी वास्ता पड़ता है सन्त उनकी भी संभाल करते हैं।''

अगर सन्त किसी जानवर की सवारी कर लें, किसी पशु का दूध पी लें या किसी पेड़ का फल खा लें तो सन्त उन्हें इंसानी जामे

का हकदार बना देते हैं। इसमें कोई शक नहीं कि गुरु उनकी संभाल करता है लेकिन मुक्ति नाम में है। आगे उसके भाग्य हैं कि वह नाम की तरफ आता है या उस सुनहरी मौके को खो देता है।

मुझे इंटरव्यू में काफी प्रेमियों ने अंदर के अभ्यास के तजुर्बे बताए जिसे सुनकर मुझे खुशी हुई। कई प्रेमी तो गुरु स्वरूप तक भी पहुँचे उन्होंने गुरु से बात भी की लेकिन वे फिर भी कहने में असमर्थ हैं कि यह वाक्य ही सच्चाई है, उनका मन उनसे कहलवा लेता है कि कहीं यह सपना तो नहीं! जबकि मैं हमेशा सतसंगों में बताया करता हूँ जिस सपने में गुरु आता है वह सपना नहीं होता।

आमतौर पर सपने तो हमारे सारे दिन के सोच-विचार और कारोबार के ही होते हैं। जब हम सोते हैं हमारी आत्मा तीसरे तिल से नीचे आ जाती है मन, इंद्रियों के घाट पर आकर ऐसे सपने पैदा करता है जो ठीक नहीं होते। कई बार तो हम ऐसे गहरे खड्डे में जा गिरते हैं या बुराइयों का सामना करते हैं तो बुराई पल्ले पड़ जाती है फिर हम कई-कई दिन उदास रहते हैं कि ऐसा सपना क्यों आया, कोई घटना तो नहीं घटने वाली? लेकिन जब कभी हमें सपने में गुरु दिखाई देता है तो प्रेमी का मन कई दिन गद-गद रहता है। कई प्रेमियों को तो वह स्वरूप कई दिन आँखों के आगे दिखाई देता रहता है जिससे वे अपना अभ्यास भी बना लेते हैं।

प्यारेयो! शब्द-रूप गुरु कभी भी नौं द्वारों में नहीं आता। हम जब सोते हैं अगर हमारे ख्याल एकाग्र हैं तो उस समय गुरु अपने प्यार की डोरी से हमारी आत्मा को इस तरह ऊपर खींच लेता है जिस तरह हम मक्खन में से बाल खींच लेते हैं। हम जो कुछ भी अपने अंदर देख रहे होते हैं हमारा जबरदस्त मन फिर भी यही कहता है कि हम सपना देख रहे हैं।

जब प्रेमी अपना तजुर्बा बताते हैं तो मुझे खुशी होती है कि मेरी मेहनत रंग ला रही है लेकिन उदासी भी होती है जब प्रेमी मन इंद्रियों से ऊपर नहीं उठते, मन के धोखे में आ जाते हैं। वे जीव बड़े भाग्यशाली हैं जो किसी सतसंगी के साथ संपर्क करते हैं।

मुझे महाराज सावन सिंह जी के कई प्रेमी मिले। समय आने पर उन्हें नामदान मिला तो उन्होंने अपनी हिस्ट्री बताई कि जब हम छोटे थे उस समय हमारे बुजुर्ग बातें किया करते थे लेकिन हम नहीं जानते थे कि नाम की महिमा इतनी बड़ी होती है।

मंडी गिदड़बाह का वाक्या है, आजकल वह प्रेमी नामलेवा है। उसके गांव के कुछ दुकानदार महाराज कृपाल के दर्शनों के लिए दिल्ली जाया करते थे। यह प्रेमी सोचता कि इनका गुरु दिल्ली में रहता है और यह सारा परिवार हर महीने अपने गुरु के दर्शनों के लिए दिल्ली जाता है। कई दफा जीव को संगत का फल मिल जाता है। उसे यह फल मिला कि उसे नामदान लेने का मौका मिला।

इस बारे में मैं आपको एक कहानी सुनाता हूँ। एक बादशाह की सिर्फ एक बेटी थी। बादशाह ने विचार किया कि मैं इसकी शादी कर दूँ। जैसा कि हमारे हिन्दुस्तान में रिवाज़ है कि माता-पिता ही शादी तय करते हैं। बादशाह ने सारे शहर में मुनियादी करवा दी कि मैं एक जगह छिपकर बैठ जाऊँगा जो शाम होने से पहले मेरी तलाश कर लेगा मैं उसके साथ अपनी बेटी की शादी कर दूँगा और उसे अपने राजपाठ का वारिस भी बना दूँगा। इसमें जाति-पाति, पढ़े-लिखे, बच्चे-बूढ़े का सवाल नहीं।

ऐसी मुनियादी सुनकर बहुत से नौजवान मैदान में आए। घर से यह सोचकर निकले कि बादशाह को ढूँढ़ना क्या मुश्किल है। बादशाह ने अपने शहर की एक बड़ी सड़क पर कई प्रकार के

अच्छे-अच्छे खाने रखवा दिए। कई जगह मुजरे करवा दिए। कई जगह रंगरलियां मनाने के लिए अच्छी-अच्छी स्त्रियाँ बिठा दी।

जो नौजवान घर से बादशाह की खोज करने निकले थे उनमें से कई तो अच्छे-अच्छे खाने के चस्कों में लग गए। कई कानों के विषय राग-रंग में मस्त हो गए। कई औरतों के साथ भोग-विलास में लग गए। जिसको जैसा भी मौका मिला वह उसी में लग गया।

एक बहुत मजबूत इरादे का नौजवान था। उसने सोचा! यह सब तो मैं बाद में भी कर सकता हूँ मुझे पहले बादशाह को खोजना चाहिए। मुझे लड़की भी मिल जाएगी, बादशाही भी मिल जाएगी।

वह नौजवान आलापात्र था। बादशाह एक बाग में माली का भेष बनाकर बैठा था। इस नौजवान ने देखा कि इसका माथा और आँखें रूहानियत से चमक रहे हैं यही बादशाह है। नौजवान ने उसके चरणों पर माथा टेककर कहा, ''बादशाह सलामत! अब भेष बदलने की क्या जरूरत है आप प्रकट हो जाएं।''

इसी तरह प्रभु इस दुनिया रूपी राजधानी में गुप्त होकर हम सबके अंदर इस तरह बैठ गया है जिस तरह दूध में घी छिपा होता है। जो अंदर जाकर प्रभु से मिल लेता है प्रभु उसके सिर पर रुहानियत का ताज रख देता है। यहाँ कोई अच्छे खाने में मस्त है। कोई राग-रंग या विषय-विकारों में मस्त है। कोई मजबूत दिल वाला जिसमें ऐसी चाहना हो वही बादशाह को ढूँढ़ता है और भक्ति रुपी कन्या को हासिल करके राजपाट का वारिस बनता है।

सतसंगी ने तो हमेशा गुरु की ही वाशना देनी है। उन जीवों के ऊँचे भाग्य होते हैं जिनका सतसंगियों से संपर्क होता है। नामदान प्राप्त करने का यह बड़ा अच्छा संस्कार बन जाता है। ***

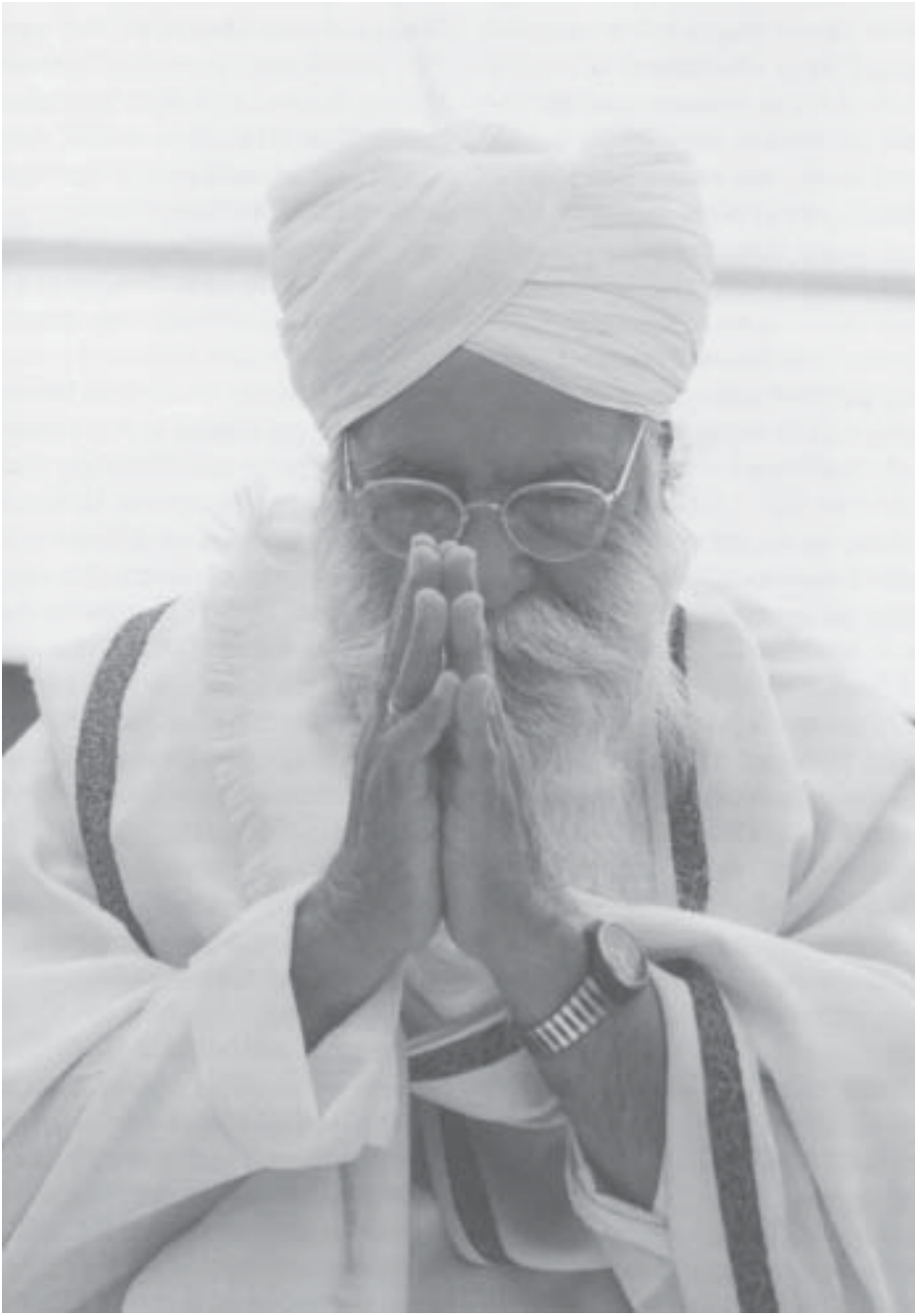

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा गुफा दर्शन के समय दिया संदेश

एक संदेश

परमात्मा सावन-कृपाल ने अपनी दया-मेहर करके हमें दस दिन का मौका दिया। मैंने आपको दस दिन यही समझाने पर जोर दिया हैं कि पवित्रता हमारे रुहानी और दुनियावी जीवन में बहुत जरूरी है। जो विषय-विकारों का जीवन नहीं जीते उन्ही का मन शान्त रहता है। हम दुनिया में जितना ख्याल फैलाते हैं उतना ही हमारा मन अशान्त हो जाता है और हम तीसरे तिल से, गुरु के प्यार से दूर हो जाते हैं।

हमें महाराज कृपाल की यह बात याद रखनी चाहिए जैसा कि महाराज कृपाल ने मेरे मुत्तलिक कहा था कि इसमें से महक आएगी यह चंदन की तरह महकेगा और वह महक समुद्र पार कर जाएगी। प्यारेयो! मैं भी कहा करता हूँ कि सतसंगी में से महक आनी चाहिए, दूसरा आदमी उस पर मस्त हो जाए और उससे फायदा उठाए कि इसमें नाम की खुशबू है और मैं भी इस खुशबू को प्राप्त करूँ। यह अच्छा जीवन जी रहा है वह भी नकल करके अच्छा जीवन जीने की कोशिश करेगा। सन्तमत का यही मकसद होता है कि हम दुनिया में अच्छे इंसान बनें और भक्ति कर सकें।

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''गुरु-पीर खुद नहीं उड़ते उनके सेवक ही उन्हें उड़ाते हैं, उनका नाम रोशन करते हैं।'' सन्तों की इज्जत सेवकों के हाथ में होती है।

माड़ा कुत्ता खस्मे गाली।

अगर कुत्ता अच्छा हो तो लोग उसके मालिक की बड़ाई करते हैं अगर सन्तों के सेवक शान्त होंगे तो इस संसार मण्डल पर सन्तों की महिमा होगी और सन्त हमें ज्यादा खुशी देंगे।

सबसे पहले सतसंगी को यह आदत डालनी चाहिए कि वह चलते-फिरते या किसी से बात करते हुए भी अपने ख्याल को तीसरे तिल पर दोनों आँखों के बीच टिकाकर रखे। जब हमारी आत्मा को तीसरे तिल पर टिकने की आदत बन जाएगी तो नीचे की तरफ खींचने वाली जंजीरे या धाराएं एक-एक करके टूटनी शुरु हो जाएगी और हम सूक्ष्म मण्डल में पहुँच जाएंगे। वहाँ का कर्त्ता-धर्ता ज्योत-निरंजन है फिर ऊपर से कारण मण्डल का 'शब्द' उसे खींचकर ऊपर ले जाएगा।

हमारा मन स्थूल मण्डल में हमें जितना तंग करता है उतना सूक्ष्म मण्डल में तंग नहीं करता और वहाँ पर यह हम पर हावी नहीं होता। इसके जितने भी शिविर है वे नीचे रह जाते हैं और हमारी आत्मा इसके पंजे से आजाद हो जाती है।

हर सतसंगी को समय की कद्र करनी चाहिए क्योंकि दरिया की एक लहर दूसरी लहर का इंतजार नहीं करती इसी तरह मौत भी किसी का इंतजार नहीं करती। सतसंगियों को यह बहुत सुंदर मौका मिला है कि इंसानी जामे में आकर उन्हें 'नाम' मिला है, रहनुमाई करने वाला गुरु मिला है। अब हमारा फर्ज बनता है कि गुरु ने शब्द की जो अंगुली हमारे हाथ में दी है हम उस अंगुली को पकड़कर रखे।

हमें यह भी ध्यान रखना चाहिए कि जिस समय हम कोई बुराई करते हैं उस समय कोई हमें देख रहा होता है क्योंकि

हमारा गुरु 'शब्द-रूप' होकर हमारे अंदर बैठा है। सतसंगी को यह विश्वास होना चाहिए कि मेरा गुरु मुझे देख रहा है लेकिन वह पर्दे के पीछे खामोश है।

काल कोई भी मौका हाथ से नहीं जाने देता। वह अंदर से गुरु को जानकारी देता है कि देख! तेरा नामलेवा क्या कर रहा है? तूने इसे नाम दिया है तू इसकी करतूत देख लेकिन गुरु दया का पुंज होता है, बहुत भरोसे वाला होता है और उसमें बहुत सब्र होता है। वह काल से यही कहता है कि मैं इसे सुधारूँगा।

हमें पवित्र जीवन जीने की आदत डालनी चाहिए। अगर पाँच साल का बच्चा भी किसी खेत की रखवाली के लिए बैठा हो तो हमारी यह हिम्मत नहीं होती कि हम वहाँ से कोई फल तोड़ लें! परमात्मा रूप गुरु हमारे अंदर बैठा है फिर भी हम खोटा कर्म करने से नहीं डरते। हमारे दिल में गुरु के लिए पाँच साल के बच्चे जितना भी डर नहीं है।

सन्त-महात्मा इस संसार में कोई समाज तोड़ने के लिए नहीं आते। वे हमें यही समझाते हैं कि हम अच्छे इंसान बनें। हम अच्छे इंसान तभी बन सकते हैं जब हम अपने कुल के प्रति वफादार होगें। कोई यह न कहे कि देखो! यह इस कुल में पैदा होकर क्या कर रहा है इनके बुजुर्ग भी ऐसे ही होंगे। हमें अपने समाज के प्रति भी मजबूत होना चाहिए कि हर कोई यही कहे कि इनके समाज में अच्छे सन्त पैदा हुए हैं तभी इनका जीवन इतना अच्छा है। इनके दिल में गुरु के लिए तड़प है और प्यार है।

सन्त-महात्मा हमें दुनिया में जीने का तरीका भी बताते हैं कि हमने दुनिया में रहते हुए अपना रुहानी जीवन बनाना है। हमें

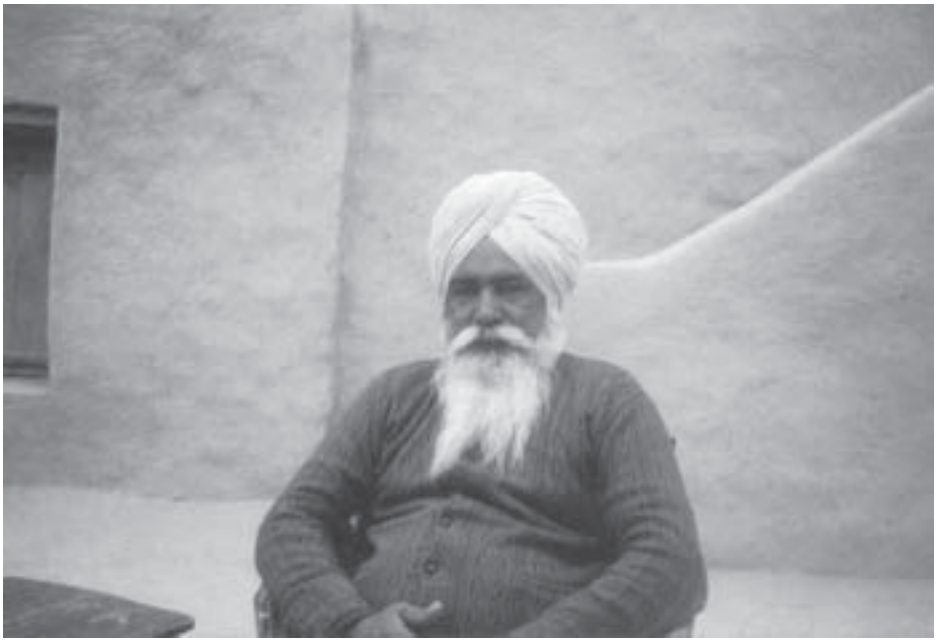

अपने देश के प्रति कोई भी बुरा कर्म नहीं करना चाहिए, हमारे अंदर देशभक्ति भी होनी चाहिए।

इस जगह के बारे में आपने बहुत कुछ सुन रखा है और पढ़ा भी है कि किस तरह दया करके गुरु कृपाल ने यह जगह बनाई। इस गरीब आत्मा को यहाँ खुद ही बिठाया और खुद ही रहमत की। बेशक हम करोड़ो ग्रन्थ लिख लें फिर भी वह रहमत ब्यान नहीं हो सकती। फल खाने से ही पेड़ की अच्छाई का पता लगता है।

जिन्होंने गुरु का हुक्म माना होता है उन्हें ही उसके स्वाद का पता होता है। दयालु कृपाल ने जिसे भी 'नाम' दिया है वह उसे जरूर तारते हैं, यह उनकी जिम्मेवारी है। वह अपने दरबार में उनकी इंतजार कर रहे होते हैं लेकिन बहादुरी उन्हीं की है जिन्होंने जीते जी अपने गुरु की आज्ञा का पालन किया।

***

13.01.1986

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा प्रेमियों को भजन पर बिठाने से पहले

मेडिटेशन टाक

शाह कृपाल प्यारेया अटक जरा इक पल जावीं।
असी रोंदे खड़े नसीबां नूं साड्डी सुण दर्दा दीं गल जावीं।

हाँ भई! बाहर से ख्याल को हटाकर अंदर की तरफ ले जाना है। सूरज, चंद्रमा, सितारे और प्रकाश सब कुछ अंदर ही है। जब हम अपने फैले हुए ख्याल को तीसरे तिल पर एकाग्र कर लेते हैं तो हमारी आत्मा और मन यह सब कुछ देखना शुरू कर देते हैं। जब मन अपने केन्द्र तीसरे तिल से नीचे गिर जाता है तो न यह प्रकाश देख सकता है और न ही आवाज सुन सकता है।

सन्तमत मेहनत माँगता है, कई साल मेहनत करनी पड़ती है। मन हमारे अंदर जल्दबाजी या सुस्ती पैदा करता है अभ्यास में बैठने नहीं देता अगर भूल-चूक से किसी की सोहबत में जाकर दस दिन अभ्यास में बैठ जाते हैं तो यह हमारे अंदर जल्दबाजी पैदा करता है। जब हम श्रद्धा और प्यार से सिमरन करते हैं तब शरीर में से मन और आत्मा की धारा सिमटनी शुरू हो जाती हैं। जब हम इन्हें तीसरे तिल पर एकाग्र कर लेते हैं तब हम अपने पाँव पर खड़े हो जाते हैं; हमारा रास्ता किताब की तरह खुल जाता है। हमारे अंदर उत्साह, सच्चा प्यार और तड़प पैदा हो जाती है।

हमने बाहर की किसी आवाज की तरफ ध्यान नहीं देना हर व्यक्ति अपने-अपने काम में मस्त है। मन को शान्त करना है अभ्यास को बोझ नहीं समझना प्रेम प्यार से करना है। मन को बाहर भटकने नहीं देना तीसरे तिल पर एकाग्र करना है। हाँ भई! बैठो।

***

धन्य अजायब

आश्रम प्रोग्राम

फरवरी-

मार्च-

अप्रैल-